हिन्दी न जाने किस दुनिया में खो गई !

"बीबी जी, टेम क्या हुआ है?'' यह शब्द हमारी महरी के थे जो मेरी नानी जी से समय पूछ रही थी। वह चाहती तो यह बात इस प्रकार भी पूछ सकती थी "बीबी जी कितने बजे हैं?'' या "बीबी जी समय क्या हुआ है?'' पर शायद उसे भी अन्य भारतीयों की भाँति विदेशी भाषा अधिक प्रिय थी।

यह उपहास का विषय नहीं एक कड़वा सच है कि हिन्दी का अस्तित्व धीरे-धीरे नष्ट होता जा रहा है। लोग हिन्दी जानते हैं, समझते हैं, परन्तु बोलने में अपनी हेठी समझते हैं। वे अपनी मातृभाषा की उपेक्षा कर अंग्रेजी बोलने में ज्यादा गौरव अनुभव करते हैं।

अधिकतर शिक्षित नवयुवकों के मस्तिष्क में यह बात घर कर गयी है कि अंग्रेजी से अच्छी कोई भाषा नहीं है। उन्होंने अपना एक सिद्धान्त बना लिया है कि जब किसी से पहली बार मिलो तो दो-चार वाक्य अंग्रेजी में अवश्य बोलो, क्योंकि उनके विचार में यह उनके शिक्षित एवं सुसंस्कृत होने का प्रमाण है।

मातृभाषा की यह दुर्दशा शायद ही किसी अन्य देश में देखने को मिले। अंग्रेजी भाषियों तथा अन्य अहिन्दी भाषियों से वार्तालाप करने की विवशता भी उन भाषाओं के प्रचार का कारण है।

आजकल के नवयुवक बड़ी शान से अपना वार्तालाप अंग्रेजी में शुरू करते हैं। परन्तु भाषा के पूर्ण ज्ञान के अभाव में दो-चार वाक्य अंग्रेजी में बोलने के बाद पुन: हिन्दी में ही बात शुरू कर देते हैं। उनके द्वारा बोले गये वाक्य न तो पूर्ण रूप से हिन्दी में ही होते हैं और न ही अंग्रेजी में। वे प्राय: कुछ इस प्रकार के होते हैं "मेरे पापा कल मॉरनिंग की फ्लाइंट से सिंगापुर जा रहे हैं।''

जैसे एक गीत है कि "गाना आये या न आये गाना चाहिये।'' वैसे ही इनके लिये यह सिद्धान्त है कि "भाषा आये या न आये बोलनी चाहिये।''

एक चीनी महिला ने भारत आने से पूर्व पाँच वर्षों तक हिन्दी भाषा का अध्ययन किया, परन्तु यहाँ के किसी संवाददाता के पूछे जाने पर उन्होंने कहा - "भारत आने का परिणाम यह निकला है कि मैं पहले से सीखी हिन्दी भी भूल गयी हूँ।'' हम भारतीयों के लिये इससे अधिक लज्जाजनक बात और क्या हो सकती है?

अभी भी समय है। हम अपनी मातृभाषा को जीवित ही नहीं बल्कि उसके रूप को निखार कर उसे और अधिक समृद्ध बना सकते हैं।

अन्य भाषायें बुरी नहीं परन्तु अपनी भाषा आखिर अपनी ही होती है।

इसका ऐसा निरादर न कीजिये।

गुरदीप सिंह दुआ, तकनीशियन ग्रेड II